।। प्रथम अध्याय ।।

शेवडेजी का व्यक्तित्व

स्व.श्री. अनंत गोपाल शेवडे नागपुर विभाग के एक प्रसिध्द पत्रकार तथा हिंदी कथाकार है । अहिंदी भाषी होकर भी शेवडे राष्ट्रभाषा हिंदी के सेवक है । उन्होंने लगभग पचास - पचपन वर्षों तक राष्ट्रभाषा हिंदी को अपनाकर साहित्य सृजन किया । उनका निर्बाध लेखन ही उनकी साहित्य विषयक अटल श्रध्दा का परिचय देता है । निरंतन लेखन कर शेवडेजी ने अपने साहित्य तथा जीवन - दर्शन को विशाल और विकसित बनाया है । हिंदी साहित्य की उपन्यास परंपरा में उन्होंने ग्यारह उपन्यासों का योगदान दिया और इस परंपरा को समृध्द बनाने का प्रयत्न किया है ।

विश्व में अजाने - अपहचाने कितनीही शक्ति, शांति और आनंद का प्रवाह बहते रहता है । उसका अनुभव करता है कलाकार-साहित्यकार । कलाकार विश्व की ओर अपनी दृष्टि से देखता है और अपने अनुभव हमारे सामने प्रस्तुत करता है । उसके इन विचारों का प्रभाव बडा जबर्दस्त होता है जो मनुष्य के जीवन में हलचल निर्माण करता है । कभी कभी उसका प्रतिकूल परिणाम भी दिखाई देता है । उसके कारण ढूँढ़ने के लिए कलाकार के जीवन का मूल्यांकन प्रथम आवश्यक होता है । " कलाकार की कला का मूल्यांकन करने से पूर्व उसके व्यक्तिगत जीवन का परिचय प्राप्त करके व्यक्तित्व का विश्लेषण कर लेना हितकर हुआ करता है । क्यों कि कलाकार के व्यक्तिगत जीवन की अर्जित अनुभूतियाँ, स्मृतियाँ एवं कल्पनाओं की अभिव्यक्ति है । कलाकार का व्यक्तित्व जितना सशक्त और गौरवपूर्ण होगा उसकी कला उतनी ही चमत्कृत और रसपूर्ण होगी "[1]

जन्म :

" श्री. अनंत गोपाल शेवडे का जन्म 8 सितंबर, 1911 को सौंसर (जिला छिंदवाडा, मध्यप्रदेश) नामक तहसील के गाँव में हुआ था ।"[2] यह, जन्मस्थली एक तहसील का गाँव है, हिंदी-मराठी भाषाओं का संगम और मध्यप्रदेश का सीमांत प्रदेश है । जहाँ शेवडेजी के पिता उन दिनों नायब तहसीलदार थे । उनकी मातृभाषा मराठी थी ।

पिताजी सरकारी नौकर होने के कारण नौकरी के सिलसिले में उनके तबादले हमेशा हिंदी भाषी स्थानों में ही होते रहे और इसके परिणाम स्वरूप हिंदी भाषा से शेवडेजी बचपन से ही परिचित हो गए । इसीलिए जाने अनजाने आरंभ से ही उनका रूझान हिंदी की ओर बढ़ता गया और कुछ कालोपरान्त अप्रत्याशित गति से हिंदी उनका जीवन बन गयी ।

शिक्षा :

बालक अनंत की प्राइमरी शिक्षा सौंसर की पाठशाला में हुई जहाँपर मराठी माध्यम था । उसके बाद पिताजी की तबादला होशंगाबाद हुआ । अतः उनकी हाइस्कूल की पढ़ाई होशंगाबाद में हिंदी माध्यम व्दारा हुई । " श्री शेवड़े का बचपन सुख में बीता । पिताजी की सरकारी नौकरी के कारण एक साधारण मध्यवित्त परिवार की सारी सुख - सुविधाएँ उन्हें प्राप्त थी । " [3]

बचपन में ही उनके ह्रदय में देश के प्रति अभिमान जागृत हुआ था । पिता गोपालराव सच्चे, पापभीरू, सात्त्विक और शांत वृत्ति के थे । माँ रमाबाई गाँधीजी की भक्त थी । ईश्वर भक्त तो थीं ही जो कि एक भारतीय परिवार की परंपरा थी । इसके बावजूद वह एक कर्तृत्ववती, बुध्दिमति और देशभक्त नारी थी । माता धार्मिक होने के कारण हररोज तुलसीकृत रामचरित मानस पढ़ती और चरखे पर सुत कातती थी । 1921 के असहयोग आंदोलन की इस हवा में तथा घर के धार्मिक देशाभिमानी वातावरण का गहरा प्रभाव बालक अनंत के मानस पर पाया जाता है ।

सन 1928 में उनकी मैट्रिक परीक्षा आरंभ हो गई थी तब अकस्मात उनके पिताजी का देहांत हुआ । इसी दुःखपूर्ण हालत में उन्होंने परीक्षा दी । "फिर भी भगवान की कुछ ऐसी कृपा रही कि उस परीक्षा (मैट्रिक) में सर्वप्रथम आने के कारण उन्हें एच. मित्रा स्वर्णपदक प्राप्त हुआ ।"[4] उसके बाद अपनी माँ तथा अन्य भाईयों के साथ वे नागपुर में आ गए । शेवडेजी ने पढ़ाई के साथ साथ कहीं ट्यूशन्स की, कहीं दो-एक घंटे की स्कूल मास्टरी की । एकाध बार अखबार बेचने का भी काम किया, पर अपना शिक्षा-कार्यक्रम जारी रखा । "माता - पिता की धार्मिक वृत्ति तथा घर के सांस्कृतिक वातावरण

.....3/-

से आपका दृष्टिकोण हमेशा विशाल और मानवता वादी बना और आपकी अभिरुचि साहित्य उपलब्धि की ओर केंद्रित हुई । " [5]

लेखन कार्य का प्रारंभ :

शेवडेजी का सर्वप्रथम हिंदी लेख इलाहाबाद के "बालसखा" मासिक पत्र में सन 1925 में छपा । तब उनकी आयु केवल 14 वर्ष की थी । किशोरावस्था से ही उन्होंने कथा, कहानियाँ और माता के सदुपदेश जैसे लेख लिखें । तथा कृष्ण, बुध्द, ईसा, म.गांधीजी पर उनके उपदेशात्मक लेख विश्वामित्र, माधुरी, सुधा विशाल भारत आदि पत्र - पत्रिकाओं में छपते रहें । कॉलेज के दिनों में लिखी " संदूक का मालिक " नामक कहानी "हंस" में प्रकाशित हुई इसकी प्रशंसा स्वयं मुन्शी प्रेमचंदजी ने की थी । हाईस्कूल के जीवनकाल में ही विश्वसाहित्य की चुनी हुई पुस्तकोंका अध्ययन और मनन उन्होंने कर डाला । रामायण, महाभारत और कालिदास की रचनाएँ उन्होंने पढ़ी । अंग्रेजी के श्रेष्ठ उपन्यास तथा शेली, कीट्स, टेनीसन की कविताओं का अध्ययन किया । बचपन से ही उन्हें गांधीजी के प्रति गहन आस्था हो गई और जब कॉलेज में उन्होंने गांधी साहित्य पढ़ा तो गांधी - दर्शन से भी उन्हें आस्था हो गई ।

नागपुर के मॉरिस कॉलेज के तृतीय वर्ष में जब शेवड़ेजी पढ़ रहे थे तब उन दिनों म. गांधीजी का देशव्यापी आंदोलन जोर पकड़ रहा था । उस वक्त उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया और वे अपनी चचेरी बहन यमुताई ठाकूर के साथ इस आंदोलन में शरीक हुए । लाठी, गोलियाँ और जेल का अनुभव ले लिया जिसके कारण कुछ समय, तक उन्हें कॉलेज भी छोडना पड़ा । शेवडेजी ने इस काल में बेतुल और सागर जिले के सत्याग्रह आंदोलन का संचालन किया । "वॉर कौंसिल" के सेक्रेटरी हुए, नागपुर षड्यंत्र केस में गिरफ्तार हुए, पर सबूत न मिलने पर रिहा कर दिए गए ।

अंग्रेजी विषय लेकर उन्होंने एम.ए. किया इसलिए अंग्रेजी पर उनका हिंदी सा ही प्रभाव रहा । "1927-28 में शेवड़ेजी "खंडवा" के "कर्मवीर" के संपादक

.....4/-

पं. माखनलालजी चतुर्वेदी के संपर्क में आए । उनके प्रभाव के कारण हिंदी में लिखने की प्रवृत्ति ने कुछ अधिक प्रोत्साहन पाया । उन्होंने 1928-30 के बीच "कर्मवीर" में लेख - कहानियाँ लिखी और नागपुर के संवाद दाता के रूप में कार्य किया ।"[6] बाद में गाँधीजी के सत्याग्रह आंदोलन में सक्रिय हिस्सा ले लिया ।

कॉलेज की ही अवस्था में लगभग 1930 में आपका पहला उपन्यास "ईसाई बाला" प्रकाशित हो गया । इस उपन्यास में राष्ट्रभक्ति तथा आंतरप्रांतीय विवाह का समर्थन है । गुजराथी में यह उपन्यास अनुवादित हुआ और " 1933 मे सी.पी.एन्ड बरार लिटरेरी एकादमी की ओर से पुरस्कृत भी किया गया । "[7]

पत्रकार :

जब वे नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. पास हो गए तब उन्हें आसानी से सरकारी कॉलेज में लेक्चरर की नौकरी मिल सकती थी । लेकिन उनका जीवन - क्रम पहले ही तय हो चुका था । "उनका निश्चय था कि वह सरकारी नौकरी नही करेंगे, देश - सेवा में अपना जीवन लगा देंगे । इसके लिए उन्होंने पत्रकारिता का माध्यम चुना ।"[8]

उन दिनों राष्ट्रीय वृत्ति का कोई अँग्रेजी समाचार पत्र नागपुर में नही था । इसलिए 15 अगस्त, 1933 में "इंडिपेंडेट" (Independent) नामक अँग्रेजी साप्ताहिक पत्र की स्थापना की । म. गाँधीजी के आत्मा की पुकार, उनका पावन संदेश जन - जन तक पहुँचाने के लिए आप पत्रकार बनें । अपने देश की, हृदय की और अपने कलम की आजादी वे चाहते थे । अँग्रेजों के शासन काल में इसतरह किसी ध्येय से प्रेरित होकर स्वतंत्र वृत्ति रखनेवाला अखबार चलाना बहुत मुष्किल का काम था । स्वतंत्र वृत्ति के लेखों के लिए उन्हें घर की चीजवस्तु बेंचकर जमानत भी देनी पड़ी । फिर भी इस अखबार ने स्वतंत्र विचार धारा को खंडित नहीं होने दिया । इस कृति से "इंडिपेंडेंट" का नाम और उजागर हो गया । जनता पर इसका अच्छा प्रभाव पड गया । लोग आपको सम्मान की दृष्टि से देखने लगें । परंतु प्रेस की आर्थिक स्थिति चिंताजनक थी ।

देशभक्ति की भावना :

देशभक्ति की भावना ने इसीवक्त शेवड़े तथा यमुनाजी को निकट लाया । और 1939 में दोनों विवाहबध्द हो गए । यमुनाजी भी उन्हीं के समान ही लेखिका, बहुश्रुत बुध्दिमान तथा राष्ट्रीय विचारधारा से पोषित नारी रही है । आर्थिक अभाव के कारण दोनों को बड़ी कठिनाइयाँ सहनी पड़ी । आप दोनों ने आर्थिक बोझ हटाने के लिए कई टयूशनें भी की थी । यमुनाजी ने कहा है - "कभी कभी एक बार कुंकुम की शीशी के लिए दो आने भी आपकी जेब में नहीं थे ।" [9] फिर भी गाँधीजी के प्रति उनकी श्रध्दा दिनों दिन बढ़ती ही गयी । 1942 के आंदोलन में उन्होंने परिवार समेत सक्रिय भाग लिया । 1942 ई. में अन्य राष्ट्रीय पत्रों की तरह "इंडिपेंडेंट" भी कुछ महीने बंद हो गया । सन 1944 में प्रेस को अचानक आग लग गई । उस वक्त फायर ब्रिगेड़ तथा जनता ने आपकी बहुत मदत की ।

राजनीति में. प्रवेश :

"इंडिपेंडेन्ट" पत्र को जीवित रखने के लिए उन्हें अथक परिश्रम करने पड़े तथा अँग्रेजी शासन से घोर संघर्ष करना पड़ा । उन्हें कारावास भी हुआ तब उनका सोया हुआ साहित्यकार फिर से जागृत हुआ । जेल जीवन के ये वर्ष उन्हें पल्लवित ही करते रहें क्यों कि इस एकांत साधना में विनोबा भावे, काका कालेलकर, किशोरभाई मशरूवाला जैसे श्रेष्ठ व्यक्तियोंका सान्निध्य आपको प्राप्त हुआ । जिससे आपके सामने अपना लक्ष्य स्पष्ट हो गया । विनोबाजी में तो उन्हें महात्माजी के दर्शन होते थे । "इसप्रकार आपकी सुप्त शक्ति, अंतर्मुख दृष्टि साहित्यकार के रूप में सृजन की पृष्ठभूमि में प्रवाहित होने लगी । आंदोलन, पत्रकारिता और साहित्य सृजन आपके जीवन के ये तीन बिंदु तीन वर्षों में आपको मुखरित कर गए ।" [10] इसी काल में सत्य,अहिंसा, और मानसिक शांति आपके जीवनसाथी बन गए । वे पूरी तरह से अध्ययन में जूट गए । अँग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, जर्मन, इटालियन साहित्यकारों के साहित्य को सुरुचि से पढ़ा । टालस्टाय स्टीफन, इप्सेन, खलिल जिब्रान, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद

आदि का साहित्य पढ़ा । जेल के एकांत में ललित लेखन भी किया । मराठी मातृभाषी होते हुए और अँग्रेजी विषय में एम.ए. होकर भी उन्होंने हिंदी भाषा विषयक प्रेम के कारण हिंदी में लिखना प्रारंभ किया । गाँधीजी ने स्वयं अपने हाथ से लिखकर उन्हें एक संदेश भेजा था कि हिंदी का घर घर में प्रचार किया जाय । "यह संदेश ही मानो शेवड़ेजी के लिए एक आदेश हो गया । उनके सारे जीवन का प्रमुख कृतित्व हिंदी भाषा और साहित्य को समृध्द करने में बीता । "[11]

आप हिंदी, भाषा से दिलो – जान से प्रेम करते थे । "डायरी के पन्ने", "तीन कंकड़", "प्रतिमा" ` "संतरों की डाली" आदि कहानियाँ उन्होंने जेल जीवन में ही लिखी । "तिसरी भूख", "जीवन की किताब", "अपने अपने चस्मे", आदि लघु निबंध तथा "पूर्णिमा", "निशा–गीत", और "मृगजल" ये तीन उपन्यास जेल जीवन में ही लिखें । उनके जेल में लिखे गए साहित्य को यमुनाजी ने बहुत कुछ बदल दिया है । पत्नी यमुनाजी का वे बड़ा सम्मान करते थे । इसलिए उन्होंने इस बदलाव पर कोई आपत्ती नहीं उठाई । नारियों की कार्यक्षमता और उनकी बुध्दिमत्ता का वे बड़ा सम्मान करते थे । उनके संपूर्ण साहित्य में इसीलिए शायद नारियों के प्रति उदार भाव दृष्टिगोचर होता है । " म. गाँधीजी के सत्य, अहिंसा और असहकार आदि तत्वों पर उन्हें पूरा पूरा भरोसा था ।"[12] कितने ही लोगोंने उन्हें इस पथ से विचलित करने का यत्न किया लेकिन वे अपने पथ से भ्रष्ट नही हुए, अपने निश्चय पर अड़िग रहें । अपने जीते जी स्वतंत्रता देखने का आपका सपना था, जो 15 अगस्त, 1947 को सफल हुआ ।

जीवनका दूसरा अध्याय :

1947 के उपरान्त शेवड़ेजी के जीवन का दूसरा अध्याय शुरू होता है । राजनीतिक जीवन में वे पूर्णतः गाँधीवादी रहे । चुनाव के समय अखंड रूप से प्रचार कार्य करते रहें । लोगोंने उनकी आलोचना की । लेकिन उन्हें राजनीति से भी साहित्य में अधिक रूचि थी । इसलिए साहित्यसेवा उनका ध्येय बन गया । काँग्रेस

शासन ने भारत में अपनी जड़े जमायी । स्वतंत्र भारत में समाचार पत्रों की ओर विशेष ध्यान दिया गया । उसीके अनुरूप 1948 ई. में "इंडिपेंडेन्ट", साप्ताहिक को दैनिक "नागपुर टाइम्स", में रूपांतर हो गया । उन्हीं के "भग्नमंदिर", उपन्यास में"नागपुर टाइम्स" के प्रारंभ के जीवन का वृत्तांत है । इस काल के बारे में श्रीमती यमुना शेवड़ेजी का मत है कि लोग अपना काम शेवड़ेजी से करवा लेते, कोई भी व्यक्ति किसी भी समयमें अपने व्यक्तिगत काम के लिए शेवड़ेजी से मिलता, उनसे अपना काम करवा लेता और बाद में उन्हें भूल जाता । "आप तन्मयता से सबका काम करते रहे, परंतु आश्चर्य की बात यह है – जब इन लोगों के काम हो जाते तब ये ही लोग बाद में मजे से "सरकार के पिठ्ठू" कहकर व्यंग्य के बाण छोड़ देते, और सत्य के साथ झगड़ा प्रारंभ हो जाने पर वे कहते क्यों , हमने पहले ही कहा था कि इनसे संभलकर रहना ।" [13]

1955 ई. में. मध्यप्रदेश शासन परिषद से "मृगजल" पर एक हजार रुपयों का पारितोषिक उन्हें प्राप्त हुआ । उसके बाद "ज्वालामुखी" उपन्यास का भी जनता ने हार्दिक स्वागत किया । "नॅशनल बुक ट्रस्ट" से उसका अनुवाद भारत की चौदह भाषाओं मे किया गया । राजनीतिक दृष्टि से यह बड़ा संघर्षमय काल था । नेताओं और शेवड़ेजी के विचारों में, समाचार पत्र की स्वतंत्रा नीति के बारे में मतभेद हुए । मुकदमें चलाये गए । मित्र शत्रु बन गए और जीवन संघर्ष में उन्हें हैरान होना पड़ा । इसी संघर्ष के बीच उन्होंने "परिक्रमा", "मंगला", "भग्नमंदिर" जैसे श्रेष्ठ उपन्यास लिखें । "हर एक उपन्यास में आपके नवीन विचार, दृष्टि का तथा यथार्थ और आदर्श का समन्वय दिखाई देता है । हर एक उपन्यासों मे म.गांधीजी के हृदय परिवर्तन विचारों का सुंदर प्रतिपादन किया गया है । " [14]

"परिक्रमा" उपन्यास का आगे चलकर "अधुरा सपना" नाम से पाकेट बुक्स व्दारा प्रकाशन किया गया । इसमें गांधीवादी नीति का पुरस्कार किया है तथा स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर परिस्थिति का भी चित्रण किया गया है । "मंगला"उपन्यास को

"अंधो की गीता" कहा जाता है । गाँधी तत्व का प्रयोग करते हुए मंगला का हृदय परिवर्तन यह इसकी विशेषता है । शेवडेजी का "भग्नमंदिर" उनके जीवन का प्रतीक कहा जाय तो गलत नहीं होगा । उनके जीवन में घटित घटनाओं से मिलता जुलता वातावरण इस उपन्यास में है । "भग्न मंदिर" सच्चे तथा आदर्श" पत्रकार के लिए एक नीतिकोड कहें तो अनुचित नहीं है । [15]

प्रसन्नचित्त स्वभाव :

शेवडेजी स्वभाव से प्रसन्न चित्त थे । घर में उनके बच्चे तथा पत्नी यमुनाजी उन्हें "मदरली फादर" कहकर उनका मजाक उडाते थे । मनरंजन के लिए वे बाँसुरी और हार्मोनियम पर हाथ फेर देते थे । श्रीमती यमुना शेवडेजी लिखती है – "मनोरंजन के लिए जब हम लोग बाहर जाते थें, तब कभी कभी दोनों अपनी बाँसुरी लिए किसी नदी के किनारे बैठकर बजाते थे । उन स्वरों में हम खो जाते और वे हमारे अत्यंत सुख के क्षण होते थे"।[16] बचपन से ही अध्यात्म की और उनका आकर्षण रहा । भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और गाँधी दर्शन इनसे वे प्रभावित थे । "ज्वालामुखी", "अमृतकुंभ" "भग्नमंदिर". स्पष्ट गाँधीवादी उपन्यास हैं ।

उनकी धर्मपत्नी श्रीमती यमुनाजी शेवडे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के बंधू स्व. चिंतामणराव तांबे की पौत्री है । अनुरूप, सुयोग्य पत्नी पाने के कारण वे जीवन भर खुश रहे । "पत्नी के सहयोग से तथा सतत परिश्रम के कारण ही 1934 में प्रारंभ किया हुआ "इंडिपेन्डेट" तथा 1948 में प्रारंभ किया हुआ "दै. नागपुर टाईम्स" के आप प्रबंध संपादक तथा प्रबंध संचालक रह सके ।"[17] जीवन के अंतिम क्षणों तक वे परिश्रम करते रहे । पत्रकारिता के कार्य के लिए ही जब वे कलकत्ता गए थे वहीं पर 10 दिसंबर 1979 में वे चल बसें । उनके दुर्दैवी निधन से श्रीमती यमुनाजी सचमुच अनाथ बन गयी । लेकिन फिर भी उन्होंने अपने पति का कार्य आगे चलाया । उन्होंने "नागपुर टाइम्स" तथा "नागपुर पत्रिका" का प्रबंध संपादिका का पद सँवारा है ।

कुशल संगठक :- शेवडेजी का भिन्न भिन्न संस्थाओं में सहकार्य :

शेवडेजी एक कुशल संगठक थे । परिश्रम और सचाई के साथ यह संगठन होता था । वे भिन्न भिन्न संस्थाओं के संगठक तथा सदस्य बने रहे थे ।

1. महाराष्ट्र राज्य की प्रेस सलाहकार समिति के अध्यक्ष ।
2. इंडियन ॲन्ड ईस्टर्न न्युजपेपर सोसायटी के उपाध्यक्ष ।
3. विदर्भ प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिती के अध्यक्ष ।
4. भारतीय विद्या भवन नागपुर केंद्र के उपाध्यक्ष ।
5. नागपुर नागरिक शांति समिती के उपाध्यक्ष ।
6. पी.ई.एन्. के सदस्य ।
7. भूतपूर्व डायरेक्टर प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया ।
8. सूचना और प्रसारण हिंदी समिती भारत सरकार के सदस्य ।
9. पत्रकारिता विभाग का बोर्ड ऑफ स्टडीज् नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर के सदस्य ।
10. भारतीय विश्व हिंदी संमेलन तथा विश्व हिंदी संमेलन के प्रणेता एवं महामंत्री का कार्य कर उन पदों का गौरव बढ़ाया है ।
11. महाराष्ट्र हिन्दी परिषद के प्रणेता ।

सम्मान एवं पुरस्कार :

शेवडेजी ने अपने जीवन में, सफल साहित्यिक, निर्भिक पत्रकार, विश्वविख्यात चिंतक, कुशल संगठक के रूप में अनेक सम्मान एवं पुरस्कार पाये हैं ।

*** बरार लिटरेरी एकेडमी पुरस्कार : (1933)**

प्रथम उपन्यास "ईसाई बाला" पी.सी. एण्ड बरार लिटररी एकेदमी द्वारा उत्कृष्ट उपन्यास के रूप में पुरस्कृत हुआ ।

*** मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिषद पुरस्कार : (1955)**

स्वातंत्र्योत्तर काल में राज्य में प्रकाशित सर्वोत्कृष्ट रचना के लिए दिया जानेवाला यह पुरस्कार शेवडेजी को उनके उपन्यास "मृगजल" के लिए मिला ।

* उत्तर प्रदेश शासन पुरस्कार (1956) हिंदीतर प्रदेशों के हिंदी लेखन को गौरवान्वित करने के उद्देश्य से प्रदान किया जानेवाला यह पुरस्कार उनके प्रसिध्द उपन्यास "ज्वालामुखी" के लिए प्रदान किया गया ।

*** म. गांधी पुरस्कार : (1961)**

भारतीय संस्कृति तथा भारतीयता एवं भारत की भावनात्मक एकताके पोषक साहित्य के निर्माता और हिंदी को राष्ट्रीय तथा सामाजिक संस्कृति की वाहक भाषा बनानेवाले विव्दानों को प्रशस्ति ताम्रपत्र तथा 1501 रूपयों के रूप में दिया जानेवाला यह पुरस्कार राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, वर्धा की ओर से 1961 में शेवडेजी को प्रदान किया गया ।

*** उ. प्रदेश शासन पुरस्कार : (1961)**

हिंदीतर भाषा भाषी साहित्यकारों की उत्कृष्ट हिंदी रचना के लिए समर्पित यह पुरस्कार "भग्नमंदिर" के लिए प्राप्त हुआ ।

*** सार्वजनिक अभिनंदन : (1966)**

साहित्यिक योगदान, स्वतंत्रता सेनानी, सफल पत्रकार हिंदी के ज्येष्ठ प्रचारक होने के उपलक्ष्य में विभिन्न संस्थाओं की ओर से आयोजित अभिनंदन समारोह में भारत के तत्कालिन उपराष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसेन व्दारा रजतपत्र देकर सन्मान हुआ ।

* **महामहिम पोप का "पेपल मेडल" : (1966)**

व्हेटिकन सिटी के पोप व्दारा मानवता की सेवा के सन्मान में रोम में आयोजित एक विशेष समारोह में "पोप मेडल" प्रदान किया गया ।

* **भारत सरकार पुरस्कार : (1969)**

उत्कृष्ट साहित्य कृति के लिए समर्पित यह पुरस्कार "इंद्रधनुष्य" को मिला ।

* उ.प्रदेश शासन पुरस्कार (1973) हिंदीतर भाषा भाषीयों की उत्कृष्ट रचना के लिए "कोरा कागज" उपन्यास को पुरस्कृत किया गया ।

* **पद्मश्री पुरस्कार : (1974)**

भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपती श्री.वी.वी.गिरी व्दारा "पद्मश्री" पुरस्कार से सम्मान किया गया ।

* राजर्षि टंडन स्वर्णपदक (1975) – प्रथम विश्वहिंदी सम्मेलन का कुशल आयोजन कर हिंदी को विश्वभाषा बनाने की सर्वोच्च सेवा के लिए यह स्वर्णपदक हिंदी साहित्य संमेलन की ओर से दिया गया ।

निष्कर्ष :

इस तरह हम देखते हैं कि शेवडेजी के व्यक्तित्व में बहुमुखी प्रतिभा की शक्ति नीहित थी । अपने व्यक्तिगत जीवन में वे मातृभक्त, आदर्श पति, वत्सल पिता, के रूप में हमेशा आदर्श रहे । सामाजिक जीवन का दायित्व भी उन्होंने अच्छी तरह से निभाया है । एक स्वतंत्रता सेनानी, राष्ट्रभाषा प्रचारक, सर्वोदयी कार्यकर्ता, निर्भिक पत्रकार और साहित्यकार के रूप में भी वे हमेशा कर्तव्य-परायण रहे हैं । इन सभी

.....12/-

रूपों में सामने आते हुए भी उनमें कहीं भी किसीतरह की धांदली या गडबड नहीं दिखाई देती । अपना हर कार्य उन्होंने सुचारू एवं सुनियोजित रूप में किया है और उसमें हमेशा सफलता पाते रहे हैं ।

भारतीय संस्कृति और दर्शन में उन्हें बहुत रूचि थी । गांधीजी के प्रति, विनोबा भावे के प्रति उनके मन में गहरी श्रध्दा थी । उन्हें अपना आदर्श मानकर जीवन के हर कार्य में शेवडेजी सफलता पाने का प्रयत्न करते रहें । एक साहित्यकार के रूप में हिंदी साहित्यमें वे सदैव चिरस्मरणीय रहेंगे । अपने जीवन के अनुभवों का रंग साहित्य में घोलकर अपने साहित्य में उन्होंने सतरंगी इंद्रधनुष का आभास निर्माण किया है । अपने कृतित्व को उन्होंने बहुआयामी बनाया । उन्होंने ग्यारह उपन्यास, दो कहानी संग्रह, एक निबंध संग्रह तथा अंग्रेजी में पाँच उपन्यास तथा दो समाचार पत्रों का सृजन किया है ।

अंत में उनके व्यक्तित्व के बारे में कह सकते हैं कि उनकी प्रतिभा की गहराई नापना उनके अंतरंग मित्रों के लिए भी कठिन है । अपने चरित्र और सिध्दांतों के प्रति वे सदैव जागरूक थे । शेवडेजी सिर्फ साहित्यकार ही नहीं तो साथ ही साथ एक पत्रकार, यशस्वी पति, वात्सल्यपूर्ण पिता, संपादक, राष्ट्रभक्त स्वतंत्रता सेनानी आदि रूपों में भी प्रख्यात है । इसकारण उनकी प्रतिभा की गहराई नापना कठिन है । शेवडेजी बर्फ की चट्टान की तरह है जिसका केवल एक भाग समुद्र के पृष्ठ पर दिखाई देता है और बाकी नौ भाग पानी के भीतर रहता है जो विराट और अदृश्य होता है ।

—=:: प्रथम अध्याय ::=—

संदर्भ-सूची

1. डॉ. शं.ना. गुंजीकर, "अ.गो.शेवडे और उनका साहित्य," पृ.1

2. संपा. बाँकेबिहारी भटनागर, "शेवड़े: व्यक्तित्व, विचार और कृति," पृ.16

3. — वही — पृ.17

4. डॉ.शं.ना. गुंजीकर, " अ.गो. शेवडे और उनका साहित्य," पृ.2

5. — वही — पृ.3

6. — वही — पृ.4

7. — वही — पृ.4

8. संपा. बाँकेविहारी भटनागर, "शेवड़े : व्यक्तित्व, विचार और कृति," पृ.19

9. डॉ. शं.ना. गुंजीकर, "अ.गो. शेवडे और उनका साहित्य," पृ.5

10. — वही — पृ.6

11. संपा. बाँकेबिहारी भटनागर, "शेवड़े : व्यक्तित्व, विचार और कृति," पृ.12

12. डॉ. शं.ना. गुंजीकर, "अ.गो. शेवडे और उनका साहित्य," पृ.7

13. — वही — पृ.9

14. — वही — पृ.10

15. — वही —

16. संपा. बाँकेविहारी भटनागर, "शेवड़े : व्यक्तित्व, विचार और कृति," पृ.40

17. डॉ. शं.ना. गुंजीकर, "अ.गो. शेवडे और उनका साहित्य," पृ.13